RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-12वां अंक 45

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर
की नवीनतम प्रस्तुति मंगल धार्मिक
लोरी गीतों का अनुपम वीडियो

VAISHALI CASSETTE PRESENTS

VIDEO CD

27 वाँ पुष्प

माँ सुनाओ मुझे वो कहानी

(धार्मिक लोरी गीतों का अनुपम संग्रह)

लोरियाँ जो बच्चों को प्रेरणा दें
लोरियाँ जो संस्कार दें
लोरियाँ जो आत्मकल्याण की शिक्षा दें
लोरियाँ जो मन को शांति दें

निर्देशन - विराग शास्त्री, जबलपुर
रचनाकार - बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन
विराग शास्त्री, जबलपुर

सीडी निर्माण में सहयोगी साधर्मी :

- श्री ब्रजलालजी जैन, ग्रान्ट रोड, मुम्बई
- श्री भूपेन्द्र भाई एच. शाह, मुम्बई
- श्री नरेश सिंघई, एम्प्रेस सिटी, नागपुर
- श्री राजूभाई शाह, दादर, मुम्बई
- श्री साकेत कमल बड़जात्या, दादर, मुम्बई
- श्रीमति नेहा संदेश जैन, जबलपुर
- डॉ. एस.सी. जैन, जबलपुर

पूज्य गुरुदेवश्री के सम्पूर्णप्रवचन अब कहीं भी और कभी भी और साथ ही
तिथि पंचाग समस्त धार्मिक पर्वों के साथ

Vitragvani

VITRAGVANI एप पर

आज ही डाउनलोड करें
आपके एंड्रायड फोन पर गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध
निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला, मुम्बई

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक

श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक

विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक

स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स

गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

श्रीमती आरती जैन, कानपुर

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर

श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था

स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

"चहकती चेतना"

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,

फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002

9300642434, 09373294684

chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	तीर्थंकरों के वैराग्य का	3
4.	अधिकार मत छीनो	4
5.	नारायण - प्रतिनारायण	5-6
6.	कविता - पर्व	7
7.	दिगम्बर धर्म मे पंचामृत अभिषेक	8-9
8.	सरकारी स्कूल में पढ़ने......	9
9.	ऐसा भी उपवास	10
10.	हमारे महापुरुष - कटक के मंजू	11
11.	हमारे महापुरुष - सिंघई सभासिंह	12
12.	आपके प्रश्न आगम के उत्तर	13
13.	प्रेरक प्रसंग	14
14.	हमारे तीर्थक्षेत्र - नेमावर	15
15.	कलेन्डर - 2018	16-17
16.	रावण का जीवन और	18-19
17.	जरा सा अविवेक	20
18.	ज्ञान की वृद्धि हानि का कारण	21
19.	बढ़ती क्रूरता	22
20.	डूज एंड डान्ट्स	23
21.	मेच द पेयर	24
22.	जीवन मे दुःखों का जिम्मेदार कौन	25
23.	पाकिस्तान का जैन मंदिर......	26-27
24.	समाचार	28-30
25.	कविता	31
26.	जन्म दिवस	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

प्यारे पाठको ! आप सभी जय जिनेन्द्र। आशा है कि आप अपने सारे कार्यों के साथ जिनधर्म के द्वारा अपना कल्याण भी कर रहें होंगे। आज हमारे चारों तरफ धर्म का शोर हो रहा है, टीवी पर 400 चैनल में से 70 चैनल धर्म के हैं, हर संत, पण्डित, वक्ता विश्व शांति और आतमा से परमातमा का उपदेश दे रहा है, अपना जीवन सुधारने की बात कहर रहा है। हर चौराहे पर मंदिर बने हैं, कहीं भागवत कथा, कहीं राम कथा, तो कहीं यज्ञ चल रहे हैं। सुबह 4 बजे से मस्जिदों में अजान पढ़ी जा रही है, मंदिरों की घंटियाँ बज रही हैं, लोग अपने-अपने भगवानों का अभिषेक कर रहे हैं, अनेक स्थानों पर विधान-पंचकल्याणक हो रहे हैं, राजनेता भी धर्म के नाम पर वोट बटोर रहे हैं, जगह-जगह धार्मिक आयोजन हो रहे हैं। इतने धर्म के वातावरण के बाद भी विवाद, तृष्णा, धन के लिये अनैतिकता, आत्महत्यायें, हत्यायें जैसे अपराध बढ़ते जा रहे हैं। पारिवारिक झगड़े अदालतों में जा रहे हैं - इन सबका एक ही कारण है और वह है हमारे मन की कलुषता और जीवन का उद्देश्य का पता नहीं होना। तेज गति से कहीं भी चलते जाने से अधिक महत्वपूर्ण है सही दिशा की ओर आगे चलना, भले ही धीमी चाल ही क्यों न हो...

क्या जीवन का उद्देश्य धन कमाना, घूमना, मनोरंजन करना, शादी करना ही है, क्या इसके बाद जीवन क्या समाप्त हो जायेगा ? अरे भाई! जब हम कहीं ट्रेन से बाहर जाते हैं तो साथ में खाने की सामग्री जरूर साथ ले जाते हैं। दो दिन की सफर की इतनी चिन्ता है तो अनन्त भव की यात्रा के लिये हमने क्या तैयारी की है ? इस मनुष्य पर्याय में 25 वर्ष तो पढ़ने में गये और 20 वर्ष कमाई में। तो बाकी बचे 20 वर्ष के लिये कितना पाप करना-यह विचार करना चाहिये। श्रीमद् राजचन्द्रजी के शब्दों में "अनन्त भव के अभाव का पुरुषार्थ इस एक ही भव में करना है" और यह कार्य एक मात्र सर्वज्ञ वीतरागी शासन के अलावा कहीं नहीं हो सकता।

इसलिये अपने परिणामों के सुधारने का प्रयास करना और बिगड़ते हुये परिणामों का भय रखना- यही आदर्श जीवन है। दूसरों की बुराईयों को देखना, अपने वैभव का प्रदर्शन, अपने यश के लिये जीवन जीना महादोष हैं। आइये हम इन पंक्तियों को जीवन का आदर्श बनायें -

गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म सब फल पावें।

आपका - विराग शास्त्री

तीर्थंकरों के वैराग्य का निमित्त कारण

1	श्री ऋषभदेवजी	-	नीलांजना की मृत्यु
2	श्री अजितनाथजी	-	बिजली का चमकना
3	श्री संभवनाथजी	-	मेघ देखने से
4	श्री अभिनन्दननाथजी	-	मेघ विलय देखने से
5	श्री सुमतिनाथजी	-	जाति स्मरण
6	श्री पद्मप्रभजी	-	जाति स्मरण
7	श्री सुपार्श्वनाथजी	-	जाति स्मरण
8	श्री चन्द्रप्रभजी	-	दर्पण में देखने से
9	श्री पुष्पदन्तजी	-	उल्कापात देखने से
10	श्री शीतलनाथजी	-	हिमनाश से
11	श्री श्रेयांसनाथजी	-	पतझड़ देखने से
12	श्री वासुपूज्यजी	-	जाति स्मरण
13	श्री विमलनाथजी	-	ओस विघटन
14	श्री अनन्तनाथजी	-	उल्कापात से
15	श्री धर्मनाथजी	-	उल्कापात से
16	श्री शान्तिनाथजी	-	जाति स्मरण
17	श्री कुन्थुनाथजी	-	जाति स्मरण
18	श्री अरहनाथजी	-	मेघ फटता हुआ देखने से
19	श्री मल्लिनाथजी	-	ताड़ित
20	श्री मुनिसुव्रतनाथजी	-	जाति स्मरण
21	श्री नमिनाथजी	-	जाति स्मरण
22	श्री नेमिनाथजी	-	पशुओं का क्रन्दन सुनकर
23	श्री पार्श्वनाथजी	-	जाति स्मरण
24	श्री महावीर स्वामी	-	जाति स्मरण

प्रेरक कथा -

अधिकार मत छीनो

प्राचीन समय में द्वारका नगरी में ढंढण नाम के एक मुनिराज हुये। जब भी वे आहार के लिये निकलते तो उन्हें कभी भी व्यवस्थित आहार नहीं मिलता। ऐसा उनके साथ पूरे जीवन होता रहा। हमेशा रूखा-सूखा आहार मिलता और कई बार आहार नहीं भी मिलता। फिर भी वे समता भाव से अपनी साधना में लीन रहे और उन्होंने उग्र तप द्वारा समाधिमरण किया। उनके सारे जीवन की साधना और अन्तराय को देखकर एक साधर्मी को बहुत पीड़ा होती थी, एक बार उसके नगर में एक अवधिज्ञानी मुनिराज पधारे, उसने उन मुनिराज से ढंढण मुनिराज के आहार के अन्तराय का कारण पूछते हुये कहा - हे आत्मज्ञानी मुनिराज! इस द्वारका नगरी में स्वादिष्ट और सरस भोजन की कमी नहीं है और नगर में अनेक श्रावक देव-शास्त्र-गुरु के आराधक हैं फिर भी ढंढण मुनिवर को सम्पूर्ण मुनि जीवन में रूखे-सूखे भोजन का योग क्यों बना ?

आत्मज्ञानी मुनिराज ने साधर्मी की जिज्ञासा का समाधान करते हुये कहा - हे जिज्ञासु! सुनो पूर्व जन्म में ढंढण मुनि एक खेत का रखवाला था। वहाँ के राजा की आज्ञा से वह रखवाला, कुछ हलवाहों और बैलों को राजा के खेत की जुताई और बुबाई का काम करता था, इस काम के लिये उसे राजा से धन मिलता था। सुबह से लेकर शाम तक आठ घन्टे की मजदूरी के रुपये हलवाहों को मिलते थे। प्रतिदिन उन्हें दोपहर में एक घंटे का विश्राम भी दिया जाता था। परन्तु वह रखवाला इस विश्राम के समय में हलवाहों और बैलों से अपना व्यक्तिगत काम लेता था और उन्हें कभी शांति से भोजन नहीं करने देता था। दूसरों के अधिकार छीनने और उनको शांति से भोजन नहीं करने देने को वह रखवाला अपना अपराध नहीं बल्कि चतुराई मानता था। दूसरों के अधिकारों को छीनना और उन्हें मानसिक दुःख पहुँचाना भी हिंसा है- वह इन परिणामों का फल नहीं जानता था। इन्हीं परिणामों का फल ढंढण मुनिराज को इस जन्म में भोगना पड़ा। किसी को मारना और दुःख देना तो हिंसा है ही, किसी को मानसिक दुःख पहुँचाना भी हिंसा का बड़ा पाप है।

परन्तु धन्य हैं ढंढण मुनि जिन्होंने समता भाव से सब सहनकर समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया और अब शीघ्र ही मोक्ष पद को प्राप्त करेंगे।

साभार - अहिंसा और शील की कथायें - डॉ. श्रीमति सरोज जैन

नारायण प्रतिनारायण

आप किसी भी धार्मिक आयोजन अथवा व्याख्यान में त्रेसठ शलाका पुरुष के बारे में सुनते ही होंगे। इन शलाका महापुरुषों में 9 नारायण और 9 प्रतिनारायण भी होते हैं। आईये इनका परिचय प्राप्त करते हैं -

चक्रवर्ती से आधा साम्राज्य अर्थात् तीन खंड के अधिपति होने के कारण इन्हें अर्धचक्री भी कहा जाता है। सुनन्दक नाम की तलवार, पांचजन्य शंख, शार्ठ धनुष, सुदर्शन चक्र, कौस्तुभ मणि, अमोघा शक्ति और कौमुदी गदा - इस प्रकार इनके पास सात प्रकार के रत्न होते हैं।

हर रत्न की रक्षा एक-एक हजार देव करते हैं। इन पर सोलह चंवर ढोरे जाते हैं। इनकी सोलह हजार रानियाँ होतीं हैं। नारायण बलभद्र के छोटे भाई होते हैं। इनका शरीर उत्तम संहनन और संस्थान वाला, स्वर्ण रंग का होता है। नारायण को हरि, केशव, गोविन्द और वासुदेव भी कहते हैं। ये नारायण कोटि शिला उठाकर सुनन्द नाम के देव को वश में करते हैं फिर अनेक देवों को जीतते हुये आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार सोलह हजार राजाओं को और 110 विद्याधर राजाओं को जीतकर तीन खण्ड का आधिपत्य प्राप्त करते हैं।

कैसे बनते हैं नारायण - पूर्व मनुष्य भव में कोई जीव सम्यक्दर्शन आदि रत्नत्रय प्राप्त करके विशेष पुण्य को बांधते हैं और बाद में अज्ञान भाव से निदान बन्ध करके स्वर्ग जाते हैं और स्वर्ग की आयु पूर्ण कर पुनः मनुष्य होकर तीन खण्ड का अधिपति नारायण/प्रतिनारायण बनता है। इस भव से मरकर नियम से नरक जाता है।

सभी प्रतिनारायण युद्ध में नारायण के हाथ से अपने चक्र द्वारा मरकर मृत्यु को प्राप्त कर नरक जाते हैं।

नारायण और प्रतिनारायण का परस्पर में कभी मिलाप नहीं होता।

ये निकट भव्य होने के कारण कुछ भव धारण करने के बाद महान पद पाकर नियम से मोक्ष प्राप्त करते हैं।

नारायण जिस कोटि शिला को उठाते हैं वह आठ योजन लम्बी, आठ योजन चौड़ी और एक योजन ऊंची होती है। अनेक मुनिराज इस शिला पर ध्यान लगाकर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं और निर्वाण प्राप्त करते हैं इसलिये इसे सिद्ध शिला भी कहते हैं।

प्रथम नारायण त्रिपृष्ठ ने इसे शिला मस्तक के ऊपर तक उठाई थी। द्विपृष्ठ ने मस्तक तक, स्वयंभू ने गले तक, पुरुषोत्तम ने वक्ष स्थल तक, पुरुषसिंह ने हृदय तक, पुण्डरीक ने कमर तक, दत्त ने जंघा तक, लक्ष्मण ने घुटनों तक और अंतिम नारायण कृष्ण ने यह शिला मात्र चार अंगुल ऊंचाई तक उठाई थी।

इस चौबीसी में जो नारायण और प्रतिनारायण हुये हैं उनके नाम इस प्रकार हैं -

तह य तिविट्ठ-दुविट्ठ, सयंभू पुरिसुत्तमो पुरिससीहो।
पुंडरिय-दत्त-णारायणा य किण्हो हवंति णव विण्हू।।

तिलोयपण्णत्ति गाथा - 525

त्रिपृष्ठ द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुष सिंह, पुण्डरीक, दत्त, नारायण लक्ष्मण, और कृष्ण ये नौ नारायण हुये हैं।

अस्सगीवो तारय-मेरय-मधुकीडभा तह णिसुंभो।
भलि-पहरण-रावणा य, जर संधो णव य पडिसत्तू।।

तिलोयपण्णत्ति गाथा - 525

अश्वग्रीव, तारक, मेरक, मधुकेटभ, बलि, प्रहरण, रावण, और जरासंध ये नौ प्रतिशत्रु अर्थात् प्रतिनारायण हुये हैं।

- संकलन - श्रीमति श्वेता सौरभ जैन, इन्दौर

राग का दुःख और वीतरागता का सुख

भरत को वनवास के संस्मरण हुये राम ने कहा - वनवास में कितना स्वतंत्र और शांतिपूर्ण जीवन था। जो भी सात्विक भोजन मिला, उसे खा लिया और झरनों का पानी पी लिया। न किसी से कुछ लेना और न किसी को कुछ देना। सूखी घास पर सोना और उसी को ओढ़ना। उस समय सीता का राग था, वह दुःख का कारण बन गया। काश! पूरा राग छोड़कर वन में ही रहते तो कितना आनन्द होता.....

'कब वनवास उदास बन सेऊँ...'

पर्व

हम जैनों के पर्व अनूठे, संयम पाठ पढ़ाते हैं।
हिंसा, परिग्रह और प्रमाद से, हमको सदा बचाते हैं ।

मकर संक्रान्ति नहीं पर्व हमारा, क्यों बच्चे पतंग उड़ाते हैं?
जाने कितने पक्षी प्यारे, धागे से कट जाते हैं।

होली का ये पर्व है कैसा, नहीं हमें यह भाता है।
रंगों से गन्दा हो घर-आंगन, शील का नाश कराता है।
गली, मोहल्ला, घर गन्दा हो, पानी की बरबादी है।
चेहरा भी काला हो जाता, क्या यह भी बुद्धिमानी है?

दीपावली क्यों कहते उसको, है वीर प्रभु निर्वाण दिवस।
जलें पटाखे और फुलझड़ी, रुपयों का बरबादी बस।।
जीव अनन्तों मर जाते हैं, बच्चे भी जल जाते हैं।
अरे अहिंसा वीर दिवस पर, हिंसा क्यों फैलाते हैं?
जाने कितने जीव कांपते, बूढ़े भी डर जाते हैं।
स्वच्छ बने यह भारत मेरा, फिर कचरा क्यों कर जाते हैं ?
पूजन भक्ति स्वाध्याय से, अब अपना कल्याण करें।
वीर प्रभु ज्यों मोक्ष पधारे, ऐसा हम भी काम करें।।

त्याग तपस्या आत्मशुद्धि से हमको सदा सजाते हैं।
हम जैनों के पर्व अनूठे, संयम पाठ पढ़ाते हैं।

रचनाकार - विराग शास्त्री

दिगम्बर धर्म में
पंचामृत अभिषेक
है या नहीं

श्रवणबेलगोला में फरवरी माह में भगवान बाहुबली के पंचामृत मस्तकाभिषेक की तैयारियाँ चल रही हैं। देश के कई अन्य नगरों में भी छोटे-बड़े स्तर पंचामृत (दूध, दही, घी, चन्दन आदि से) अभिषेक जैसे आयोजन रहे हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि पंचामृत अभिषेक दिगम्बर जैन शासन की परम्परा है या नहीं ?

विक्रम संवत् 753 में काष्ठासंघ की स्थापना मुनि कुमारसेन ने की थी। इनके गुरु विनयसेन थे। गम्भीर रोग के कारण इन्होंने अपने गुरु विनयसेन से समाधिमरण धारण कर लिया। परन्तु उनकी मृत्यु नहीं हुई और उन्होंने समाधिमरण की प्रतिज्ञा तोड़ दी। बहुत समझाने पर इन्होंने प्रतिज्ञा तोड़ने का देशभद्र प्रायश्चित लिया। इसके अन्तर्गत ऐसे देश में जाना होगा जहाँ एक भी जैन न हो, वहाँ नये जैन बनाकर ही आहार ग्रहण करना। कुमारसेन प्रायश्चित पूर्ण करने चले गये। कुमारसेन विद्वान तो थे ही। इन्होंने उपदेश देकर अन्य समाज के लोगों को जैन बनाया। उन नगरों में मंदिर और जैन प्रतिमा न होने के कारण एक बढ़ई से लकड़ी की भगवान की प्रतिमा बनवाई और उसे प्रतिष्ठित कराके उसकी पूजन प्रारंभ करवा दी। कुछ समय बाद वह लकड़ी की प्रतिमा फटने लगी तब मुनि कुमारसेन ने कहा कि पंचामृत अभिषेक करो इससे प्रतिमा नहीं फटेगी।

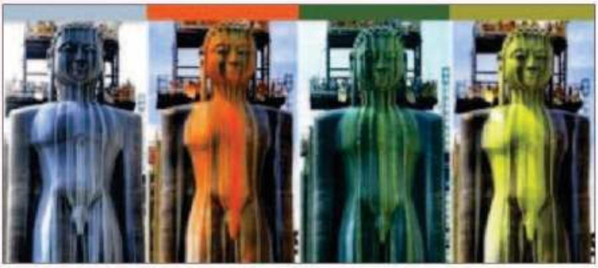

सब लोग ऐसा ही करने लगे। कुछ वर्ष बाद पत्थर की प्रतिमा भी तैयार हो गई तब कुछ लोग पुरानी परम्परा को छोड़कर जल से अभिषेक करने लगे और कुछ अपनी परम्परा मानते हुये पंचामृत अभिषेक करते रहे। बाद में भट्टारकगणों ने

इसका समर्थन करना चालू कर दिया। इसका विशेष विवरण भद्रबाहु चरित्र तथा आर्षमार्ग मार्तण्ड (आ.सूर्यसागरजी द्वारा लिखित) में और जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश में देखा जा सकता है। मूलसंघ के आचार्यों के ग्रन्थों में पंचामृत अभिषेक का कहीं उल्लेख नहीं है।

जिनधर्म में दोष सहित प्रतिमा पूज्य नहीं है। अकलंक और निकलंक जब बौद्ध आश्रम पढ़ने गये तो उन्होंने परीक्षा के समय जिनप्रतिमा पर धागा डालकर उसे लांघा था।

जिनप्रतिमा जिनसारखी कही जिनागम मांहि।
रंचमात्र दूषण लगे तो पूजनीक वह नाहिं।।

जिनआचार्यों ने चंदन के लेप की पुष्टि की है वे मूल संघ के अनुयायी नहीं थे। हम अभिषेक के समय पढ़ते हैं 'श्री मूलसंघ सुदृशाम् सुकृतैक हेतु' और अत्यंत सामान्य बात है कि जब घी आदि चिकनाई युक्त चीजों से अभिषेक किया जायेगा तो सफाई के बाद भी प्रतिमा पर उसका अंश शेष रह ही जाता है तो उसमें अनन्त सूक्ष्म जीव पैदा होंगे जिससे भयंकर हिंसा होगी।

इसलिये पंचामृत अभिषेक का समर्थन नहीं किया जाना चाहिये।

सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली पान वाले की लड़की बनी डिप्टी कलेक्टर

प्रतिभायें सुविधाओं की प्रतीक्षायें नहीं करतीं- इस बात की मिसाल बनी मध्यप्रदेश के मण्डला जिले में रहने वाली आयुषी जैन। आयुषी जैन के पिता श्री शरद जैन एक छोटी सी पान की दुकान चलाते हैं और उन्होंने मात्र चौथी कक्षा तक पढ़ाई की है। आयुषी ने अपनी पढ़ाई नगर के ही सरकारी स्कूल में की और आश्चर्य की बात यह है डिप्टी कलेक्टर जैसे कठिन परीक्षा के लिये उसने कोई ट्यूशन / कोचिंग भी नहीं ली। मात्र अपनी मेहनत और संकल्प शक्ति के बल पर ही आयुषी ने यह पद प्राप्त किया है। मण्डला जिला आदिवासी क्षेत्र कहलाता है और यह पिछड़े क्षेत्रों में शामिल है।

सम्पूर्ण जैन समाज को आयुषी की उपलब्धि को गर्व है। आयुषी की यह सफलता समाज के उन विद्यार्थियों को प्रेरणा देगी जो ये समझते हैं कि बिना सुविधा और साधनों के सफलता मिलना असंभव है।

ऐसा भी उपवास

सबेरे से अपने एक मित्र का चार-पांच बार फोन किया लेकिन वह फोन ही नहीं उठा रहा था। व्हाट्सएप और फेस बुक पर भी मैसेज किया लेकिन कोई जबाब नहीं आया। मुझे चिन्ता हो रही थी। जब दोपहर तक कोई सम्पर्क नहीं हो पाया तो मुझसे रहा नहीं गया और मैं उस मित्र के घर पहुँच गया। जाकर देखा तो श्रीमानजी घर के बाहर झूले पर बैठकर पुस्तक पढ़ रहे थे। मुझे बहुत गुस्सा आया और बोला - सुबह से तुम्हें फोन और मैसेज कर रहा हूँ लेकिन तुम्हारा कोई जबाब ही नहीं मिल रहा था। क्या बात है तबीयत तो ठीक है ना। मेरी बात सुनकर मेरा मित्र हंसने लगा और भाई! तबीयत तो ठीक है पर आज मेरा उपवास है इसलिये फोन पर तुमसे बात नहीं कर सका और न ही तुम्हें कोई जबाब दे सका। यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ तो मैंने पूछा - यार! उपवास में तो भोजन नहीं करते लेकिन फोन पर बात तो कर सकते हैं। तुमने बात क्यों नहीं की ? उसने हंसते हुये कहा - आज **डिजिटल उपवास** है। मैंने नियम लिया है कि एक सप्ताह में एक दिन मैं न किसी से बात करूँगा और न ही इंटरनेट का उपयोग करूँगा। जिससे व्हाट्सएप, फेसबुक, ईमेल आदि का उपयोग अपने आप ही नहीं होगा। इसे मैंने डिजिटल उपवास का नाम दिया है और सच बताऊँ तो आज का दिन मेरा सबसे अधिक शांति का दिन है। बहुत दिन से रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ पढ़ने की इच्छा थी, समय ही नहीं मिल रहा था और आज जब से फोन बन्द किया एक अध्याय का स्वाध्याय हो गया। इतने में भाभीजी चाय बनाकर लेकर आईं और मुझे देखते ही बोलीं भाईसाहब! आज तो कमाल हो गया, आज बहुत दिन बाद इन्होंने मुझसे शांति से बात की है और तो और बच्चों के साथ खेले भी..। आज इनके डिजिटल उपवास ने मुझे कितनी खुशी दी है मैं आपको बता नहीं सकती। अब तो अगले सप्ताह से मैं भी इनके साथ 1 दिन का डिजिटल उपवास करूँगी। बल्कि मैं तो कहती हूँ सब लोगों को एक दिन का डिजिटल उपवास करना शुरु कर देना चाहिये। जिससे सप्ताह में कम से कम एक दिन हम अपने परिवार और अपने आप को समय दे सकें और साथ ही आंखों की थकान, नींद न आने की समस्या सब दूर हो जायेंगी।

कुछ देर बाद जब मैं घर लौटा तो एक संकल्प के साथ । अब मैं भी सप्ताह में एक दिन डिजिटल उपवास करूँगा। कम से कम व्हाट्सएप और फेसबुक जैसी सोशल साइट्स का उपयोग तो बिल्कुल नहीं करूँगा।

तो पाठको ! आपका क्या विचार है। क्या आप भी सप्ताह में एक दिन का डिजिटल उपवास किसी न किसी रूप में करने का संकल्प कर रहे हैं तो आपका स्वागत है। आप अपना नाम हमें 9300642434 पर व्हाट्सएप करें।

हम आपका नाम चहकती चेतना के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

संकलन - आशीष शास्त्री, टीकमगढ़

हमारे महापुरुष -

कटक के मंजू चौधरी

मंजूनाथजी का जन्म 1720 में उत्तरप्रदेश के झांसी जिले की महरौनी तहसील के कुम्हेडी गांव में सामान्य परिवार में हुआ। बचपन में ही माता-पिता का देहांत हो गया। कुसंगति में जुआ खेलकर सारी सम्पत्ति बरबाद कर दी। किसी सम्बन्धी ने सहयोग नहीं किया तो अकेले ही धन कमाने के लिये परदेश निकल गये। कई महीनों तक एक दिन दो रूखी रोटी और एक दिन उपवास जैसा समय निकला और वे घूमते हुये सन् 1740 में नागपुर आ गये। भाग्य ने साथ दिया और छोटे से व्यापार से शुरुआत करके वे सम्पन्न हो गये और नागपुर के मराठा सरदार राजा रघु भोंसले के प्रिय व्यक्तियों में शामिल हो गये। रघु भोंसले ने बंगाल के नबाब अलीवरदी खाँ से युद्ध कर उड़ीसा उनसे छीन लिया। बाद में मंजूनाथ कटक के राजा के दरबार के चौधरी बन गये। उधर नबाब अपना राज्य वापस पाने के लिये युद्ध के तैयारी कर रहा था। नबाब से युद्ध करने का सामर्थ्य किसी में नहीं था तो वीर मंजूनाथ ने सेना संगठित कर नबाब को पराजित कर दिया। इससे राजा बहुत प्रसन्न हुये और मंजूनाथ को राज्य का दीवान बना दिया। उनकी सालाना आय 50 लाख रुपये थी। इन्होंने 1760 में प्राचीन जैन तीर्थ और सिद्ध क्षेत्र खण्डगिरि में एक विशाल मंदिर बनवाया, एक विशाल विधान का आयोजन किया। अपने भांजों को भी अपने पास बुला लिया।

भाद में अपनी जन्मभूमि कुम्हेड़ी जाकर अचल सिंह प्रधान से पुण्यास्रव कथा कोश की रचना कराई। जिनधर्म की प्रभावना के अनेक कार्यों के कारण मंजू चौधरी को पुण्याधिकारी की उपाधि दी गई। मंजूनाथजी के हृदय की विशालता देखिये कि जिन सम्बन्धियों ने उनकी सहायता करने से मना कर दिया उन्होंने उनकी बहुत सहायता की और जैन शासन के प्रचार के अनेक ऐतिहासिक कार्य किये। इनका निधन सन् 1785 में हुआ।

मंजू चौधरी के बाद उनके भांजे भवानी दास उनके स्थान पर नियुक्त किये गये। भवानीदास की पत्नी चम्पोबाई थीं। इन्होंने ग्रंथों संरक्षण के लिये लगभग 50 ग्रन्थों की प्रतिलिपि कराई। उनकी भाभी ने धूमाबाई ने खण्डगिरि में एक छोटा मंदिर भी बनवाया।

संस्कारों की यह सुन्दर परम्परा आगे की पीढ़ियों तक चलती रहा । इसलिये ज्ञानियों ने कहा कि विरासत में सम्पत्ति नहीं संस्कार दीजिये।

हमारे महापुरुष -

सिंघई सभासिंह

सिंघई सभासिंहजी बजगोत्री खण्डेलवाल जैन थे और बुन्देलखण्ड के चन्देरी नगर के मुख्य अधिकारी थे। इन्होंने सन् 1816 में चन्देरी से आठ मील दूर अतिशय क्षेत्र थूबौनजी में विशाल जिनमंदिर बनवाया जिसमें भगवान आदिनाथजी की पाषाण की 35 फुट ऊँची प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। ये आचार्य कुन्दकुन्द आम्नाय के मूल दिगम्बर थे। सन् 1827 में ग्वालियर के भट्टारक श्री सुरेन्द्रभूषण आदि अन्य प्रभावशाली विद्वानों के उपदेश से सोनागिर में विशाल पंचकल्याणकपूर्वक जिनमंदिर स्थापित कराया।

ये अत्यंत साधारण वेशभूषा में रहते थे। दतिया के राजा ने इन्हें साधारण बनिया समझकर इनका अपमान किया तो इन्होंने सैकड़ों बैलगाड़ियों में मिट्टी के बरतन, दोना-पत्तल भरकर राजा को भेजीं तो राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ तो राजा ने इनसे क्षमा मांगी। सन् 1836 में चन्देरी में विश्वप्रसिद्ध चौबीसी जिनालय का निर्माण कराया, जिसमें चौबीस गर्भगृह हैं। इनमें प्रत्येक तीर्थंकर के शरीर के वर्ण के अनुसार दो श्याम, दो हरी, दो लाल और 16 स्वर्ण वर्ण की अति सुन्दर प्रतिमायें स्थापित कीं। इसकी प्रतिष्ठा के लिये सर्वप्रथम इन्होंने ही गजरथ चलवाया था। जिससे इन्हें सिंघई की उपाधि प्रदान की गई। इसके बाद से ही बुन्देलखण्ड में गजरथ की परम्परा प्रारम्भ हुई।

हमारे महापुरुषों का हम पर बहुत उपकार है। जिनके कारण हमारी जैन संस्कृति आज इतने वैभव साथ दिखाई पड़ रही है। आज तो सर्वसाधन आसानी से प्राप्त हो जाते हैं परन्तु प्राचीन समय में न तो साधन थे और न ही अनुकूलतायें। न जाने कितने विरोधों को सहनकर इन्होंने जैन संस्कृति की सुरक्षा भी की और उसका विकास भी किया।

आपके प्रश्न आगम के उत्तर

प्रश्न- 1. क्या सभी अरहंतों की वाणी खिरती है और अगर खिरती है तो क्या सभी के गणधर भी होते हैं ?

उत्तर - केवली सात प्रकार के होते हैं, उनमें मूक केवली और अन्तःकृत केवली भगवान की वाणी नहीं खिरती,बाकी पाँच तरह के अरहंत भगवान की वाणी खिरती है और उनके गणधर भी होते हैं।

प्रश्न- 2. तीर्थंकर राजाओं के यहाँ जन्म क्यों लेते हैं किसी गरीब के यहाँ क्यों नहीं ?

उत्तर - तीर्थंकर बनने वाले जीव महापुण्य का उदय होता है इसलिये वे राजाओं के यहाँ ही जन्म लेते हैं।

प्रश्न- 3. आत्मा ज्ञानमय होता हुआ भी विपरीत कार्य क्यों करता है ?

उत्तर - अपने ज्ञान रूपी सम्पत्ति का परिचय न होने से और सुख संयोगों से मानने के कारण आत्मा विपरीत कार्य करता है।

प्रश्न- 4. भगवान की पूजा भक्ति में मन न लगे तो क्या करें ?

उत्तर - यदि भगवान का स्वरूप समझ में आ जाये तो मन अवश्य लगेगा।

प्रश्न- 5. भावना का क्या अर्थ होता है ?

उत्तर - बार-बार विचार करने को भावना कहते हैं।

प्रश्न- 6. प्रत्येक जीव सुखी क्यों होना चाहता है ?

उत्तर - क्योंकि सुख प्रत्येक जीव का स्वभाव है।

प्रश्न- 7. सम्यग्दृष्टि जीव की पहचान कैसे हो सकती है ?

उत्तर - किसी जीव के सम्यग्दर्शन की जानकारी दूसरे को नहीं हो सकती। जिसे सम्यग्दर्शन होता है वही इसका अनुभव करता है। बाहर के लक्षण में शांत परिणाम, उदासीनता, दया और देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धा होते हैं। परन्तु ये लक्षण मिथ्यादृष्टि में भी हो सकते हैं । इसलिये सम्यग्दर्शन स्वयं की अनुभूति का विषय है।

प्रश्न- 8. क्या धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है ?

उत्तर - धन से धर्म और ज्ञान नहीं खरीदा जा सकता।

प्रश्न- 9. भगवान और हममें क्या अन्तर है ?

उत्तर- भगवान वीतरागी हैं और हम रागी। लेकिन स्वभाव से कोई अन्तर नहीं है।

प्रेरक प्रसंग -

उपकार

एक बार एक व्यक्ति पण्डित गोपालदासजी बरैया से मिलने उनके घर गया। उसने बाहर से देखा कि पण्डितजी की पत्नी किसी बात पर बहुत गुस्सा कर रही थी और लगातार बोलती जा रही थी और पण्डितजी उनकी बातों का जबाब न देकर बिल्कुल मौन बैठे थे। बाद में उसने पण्डितजी से पूछा कि आपकी पत्नी इतना बोलती जा रही थी और आप बिल्कुल चुपचाप सुनते रहे।

पण्डितजी गम्भीर होकर बोले - भाई! वह मेरे कपड़े धोती है, मुझे भोजन बनाकर देती है, मेरी सेवा करती है और सबसे बड़ी बात वह मुझे क्षमा सिखाती है, तो क्या उपकार भूल जाऊँ और लड़ाई करूँ ? नहीं भाई! बल्कि मुझे तो उसका धन्यवाद देना चाहिये।

परिश्रम क्यों ?

एक बालक ने अपनी माँ से पूछा - माँ! बबूल का पौधा लगाने पर उसकी देखरेख नहीं करना पड़ती, वह अपने आप ही इतना बड़ा हो जाता है और गुलाब के पौधे छोटे-छोटे होते हैं और पापा उनकी पूरे साल भर देखभाल करते हैं। ऐसा क्यों ?

माँ ने बेटे की जिज्ञासा का समाधान करते हुये कहा - बेटा! अच्छी वस्तुयें परिश्रम से ही प्राप्त होतीं हैं।

चरित्र की ताकत

जैन सम्राट चन्द्रगुप्त जब राज्य पाने के लिये संघर्ष कर रहे थे तब उन्हें आशंका हुई कि हमारी छोटी सी सेना नंद राजा की विशाल सेना का मुकाबला कैसे कर सकेगी उन्होंने यह शंका अपने गुरु चाणक्य के सामने रखी तब चाणक्य ने कहा - पुत्र जिसके पास विशाल सेना हो पर चारित्र का बल न हो वह अवश्य पराजित होगा। चन्द्रगुप्त अपने गुरु का संकेत समझ गये और पूरी ताकत से नन्द राज्य पर आक्रमण कर दिया और विजय प्राप्त की।

हमारे तीर्थ क्षेत्र -

नेमावर सिद्धोदय

सिद्धक्षेत्र नेमावर मध्यप्रदेश के देवास जिले की खातेगांव तहसील में स्थित रमणीय क्षेत्र है। रेवा नदी के किनारे स्थापित इस क्षेत्र से रावण के आदिकुमार सहित साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों ने निर्वाण पद की प्राप्ति की है। निर्वाणकाण्ड में उल्लेख है कि - रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवा तट सार।।

इस क्षेत्र में 2 जिनमंदिर विराजमान हैं। साथ ही लाल पत्थरों से विशाल पंचबालयति मंदिर एवं त्रिकाल चौबीसी जिनालय का निर्माण कार्य चल रहा है। इनमें अष्टधातु की खड्गासन भूत-भविष्य और वर्तमानकाल की चौबीसी विराजमान होंगी। इस क्षेत्र से सिद्धवरकूट 160 किमी, गोम्मटगिरि 140 किमी, मक्सी 160 किमी की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ से 22 किमी की दूरी पर हरदा रेल्वेस्टेशन है। यहाँ आवास एवं भोजन की पर्याप्त व्यवस्था है।

सम्पर्क सूत्र - 07274-277819, 277991, 9826541550

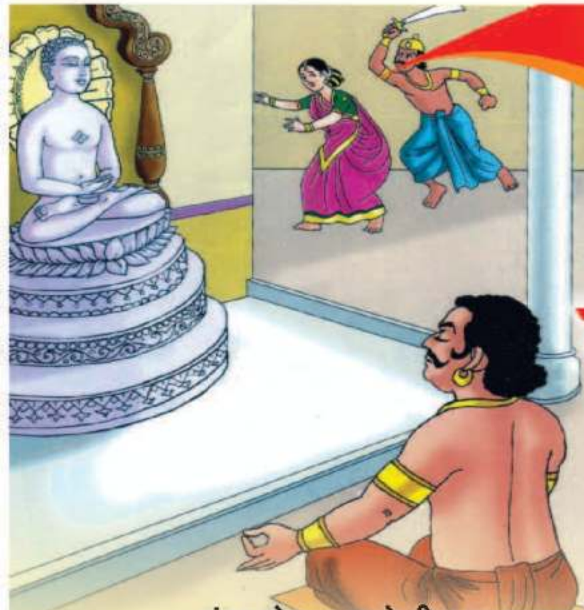

कहानी -

रावण का जीवन और राम की नीति

लंका नरेश रावण ने सीता का अपहरण कर लिया और उन्हें अशोक वाटिका में ठहरा दिया। कुछ समय बाद राम और रावण का युद्ध प्रारम्भ हो गया। रावण में युद्ध में विजय के लिये बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करने का निश्चय किया। इस विद्या के सिद्ध हो जाने पर रावण अपनी इच्छानुसार कोई रूप धारण कर सकता था। अष्टान्हिका महापर्व प्रारम्भ होने वाला था। रावण ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि भगवान शान्तिनाथ जिनालय को ध्वजा आदि से सजाया जाये और नगर के सभी जिनमंदिरों को सुसज्जित किया जाये और नगरवासी अष्टान्हिका महापर्व में जिनेन्द्र आराधना करें। फिर रावण ने अपनी पत्नी मंदोदरी को बुलाकर कहा - हे प्रिये! समस्त मन्त्री और कोतवालों को बुलाकर नगर में घोषणा करवायें कि जब तक अष्टान्हिका पर्व है तब तक समस्त प्रजाजन दयाभाव, दान, पूजा और धर्मचर्चा में संलग्न रहें। संयमपूर्वक रहकर जिनेन्द्र प्रभु की आराधना करें। आज से युद्ध आठ दिन के लिये बन्द कर दिया जाये और सभी सेनापति और सैनिक संयमपूर्वक धार्मिक कार्यों में संलग्न हों। ऐसा कहकर रावण ने शुद्ध वस्त्र धारण कर, मस्तक पर सफेद मुकुट धारण कर विशेष पूजा और आराधना के लिये जिनमंदिर में प्रवेश किया। रावण के आदेश पर मन्दोदरी ने यमदण्ड कोतवाल को बुलाकर सभी को संयम से रहने का आदेश दिया और कहा कि जब तक स्वामी की साधना पूर्ण न हो तब तक कोई उपद्रव या संकट आये तो शान्तिपूर्वक सहन करें।

रावण द्वारा बहुरूपिणी विद्या की साधना करने और अष्टान्हिका महापर्व में युद्ध बन्द करने, शांति से रहने और जिनेन्द्र आराधना करने का समाचार जब श्रीराम को प्राप्त हुआ तो सब वानरवंशी कहने लगे कि बहुरूपिणी विद्या 24 दिन में सिद्ध होती है, यदि इस बीच में यदि रावण को किसी तरह क्रोध उत्पन्न कराया जाये तो उसे वह विद्या सिद्ध नहीं होगी। यदि यह विद्या सिद्ध हो जायेगी तो रावण को कोई भी पराजित

धार्मिक एवं नैतिक पत्रिका

चहकती चेतना

Calender 2018

संपादक -
विराग शास्त्री, जबलपुर

January

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

February

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

March

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

April

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

May

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

June

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

July

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

August

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

September

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

October

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

November

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

December

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

2018

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482 002 (म.प्र.) मोबा. 9300642434

नहीं कर पायेगा। तब विभीषण ने कहा तो तुरन्त रावण को क्रोध उत्पन्न कराने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

सब योजना बनाकर श्रीराम के पास गये और उनसे यह समस्या और उसके उपाय की चर्चा की। श्रीराम ने कहा- यह अन्याय क्षत्रियों का धर्म नहीं है। जब कोई नियमपूर्वक जिनेन्द्र आराधना में बैठा हो तो इस तरह की बाधा पहुँचाना अच्छी बात नहीं है। श्रीराम के मना करने पर विभीषण लक्ष्मण के पास पहुँचे और उन्हें किसी तरह समझाकर अपनी योजना में शामिल कर लिया। बाद में लंका में सुग्रीव आदि के द्वारा अनेक प्रकार के विघ्न पैदा किये गये, लंका में भयंकर उपद्रव किये, मंदोदरी का अपमान भी किया गया परन्तु रावण बिना आहार किये जिनेन्द्र भक्ति में लीन रहे और बहुरूपिणी विद्या सिद्ध कर ली। परन्तु अन्याय और अनीति के कारण बहुरूपिणी विद्या होने पर भी रावण युद्ध में मारा गया।

. इस प्रसंग से हमें शिक्षा लेना चाहिये कि रावण जैसे व्यक्ति भी अष्टान्हिका महापर्वों में सभी पापों का त्याग कर जिनेन्द्र आराधना करते हैं और श्रीराम जैसे पुरुष भी किसी की आराधना में विघ्न न पहुँचाने का आदेश देते हैं तो हमें भी अष्टान्हिका, दशलक्षण, अष्टमी जैसे महापर्वों में संयम और शांति से रहना चाहिये और दूसरी शिक्षा अन्याय और अनीति जैसे पाप करने वाले को अपने पापों को फल अवश्य भोगना ही पड़ता है।

संकलन - अभिषेक शास्त्री, गजपन्था

कथा सुनो पुराण की -

जरा सा अविवेक

कलिंग देश (वर्तमान में) उड़ीसा में कांचीपुर नगर था। वहाँ सुदत्त और सूरदत्त नाम के दो व्यापारी रहते थे। उन्होंने सिंहल (वर्तमान श्रीलंका) आदि द्वीपों में जाकर व्यापार करके धन कमाया। अपने देश लौटते समय दोनों ने सोचा - ये सारा धन हम अपने देश ले जायेंगे तो हमारे देश का राजा हमसे बहुत सारा कर (टेक्स) ले लेगा। इसलिये उन्होंने आपसी विचार किया - थोड़ा धन बचाकर शेष सारा धन एक पेड़ के नीचे गड्ढा करके दबा देते हैं । समय आने पर धीरे-धीरे सारा धन निकाल कर ले जायेंगे। उन्होंने ऐसा ही किया और वृक्ष को पहचानने के लिये एक कुछ निशान लगा दिये और अपने-अपने घर को चले गये।

दूसरे ही दिन कोई वैद्य आयुर्वेदिक दवाइयों के वृक्षों की जड़ें खोज रहा था। उसने उसी पेड़ के नीचे खोदा तो उसे उन व्यापारियों को रखा हुआ धन मिल गया। उसे लेकर वह चला गया।

कुछ दिन बाद सुदत्त और सूरदत्त दोनों अपने धन को वापस लेने के लिये आये, परन्तु धन को वहाँ न पाकर एक दूसरे पर चोरी का आरोप लगाकर लड़ने लगे। वे आपसे लड़ते हुये मर गये और अनेक खोटी गतियों में जन्म लेने के बाद सम्मेदशिखर पर्वत पर बन्दर हुये। दोनों हर पर्याय में एक ही स्थान पर जन्म लेते थे और हमेशा लड़ते रहते थे। बन्दर की पर्याय में भी दोनों फिर लड़ने लगे। लड़ते हुये सुदत्त का जीव बन्दर मर गया और सुरदत्त का जीव मरने की हालत में पहुँच गया। उसी समय वहाँ सुरगुरु और देवगुरु नाम के चारण ऋद्धिधारी मुनिराज वहाँ पहुँचे। उन्होंने मरते हुये बन्दर को धर्म का उपदेश दिया और णमोकार मंत्र सुनाया। बन्दर को भी बहुत शांति का अनुभव हुआ और मन्द कषाय के कारण वह मरकर सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ।

बाद में उस सुदत्त के जीव ने देव पर्याय से सूरदत्त के जीव को समझाया और सूरदत्त के जीव ने भी आत्मकल्याण किया।

जरा से अविवेक और अविश्वास ने दोनों जीवों की दुर्गति करा दी और देव-शास्त्र-गुरू की शरण से उनका कल्याण हुआ।

ज्ञान की वृद्धि और हानि का कारण

1. आलस करने से
2. अधिक नींद लेने से
3. झगड़ा करने से
4. अधिक दुःखी होने से
5. अधिक चिन्ता करने से
6. रोग अधिक रहने से
7. परिवारजन के अधिक मोह से
8. धन परिग्रह की चिन्ता से
9. टीवी, मोबाइल आदि का अनावश्यक प्रयोग करने से।
10. किसी के ज्ञान में बांधा पहुँचाने से
11. परीक्षा में नकल करने से

इन सब कारणों से ज्ञान घटता है।

1. प्रयास करने से
2. नींद का त्याग करने से
3. भूख से कम भोजन करने से
4. कम बोलने से
5. ज्ञानवान व्यक्तियों की संगति करने से
6. मायाचारी से दूर रहने से
7. जो ज्ञान प्राप्त किया है उसके बार-बार चिन्तन से
8. इन्द्रिय भोगों के त्याग से
9. मन को अपने आधीन रखने से
10. बड़ों की विनय से
11. शास्त्र की विशेष विनय से

इन सब कारणों से ज्ञान बढ़ता है। तो आप स्वयं विचार करें कि आपको ज्ञान बढ़ाना है कि ज्ञान घटाना है।

काम की बातें

1. स्वस्थ बनो, पर मोटे नहीं।
2. चंगे बनो, पर निर्बल नहीं।
3. बलवान बनो, पर दुष्ट नहीं
4. सरल बनो, पर मूर्ख नहीं।
5. धीर बनो, पर सुस्त नहीं।
6. न्यायी बनो, पर निर्दयी नहीं।
7. उत्साही बनो, पर जल्दबाज नहीं।
8. दृढ़ बनो, पर हठी नहीं।
9. समालोचक बनो, पर निन्दक नहीं।
10. प्रशंसक बनो, चापलूस नहीं।
11. स्पष्ट बनो, पर उद्दण्ड नहीं।
12. चतुर बनो, पर कुटिल नहीं।
13. मितव्ययी बनो, पर कंजूस नहीं।
14. गंभीर बना, पर मनहूस नहीं।
15. योगी बनो, पर रोगी नहीं।
16. विनम्र बनो, पर याचक नहीं।
17. साधु बनो, पर स्वादु नहीं।

संकलन - श्रीमति श्रुति अभय जैन, खैरागढ़

बढ़ती क्रूरता

अभी कुछ दिन पूर्व सोशल मीडिया पर वायरल तीन वीडियो ने दिल कंपा दिया। इससे आज के मानव की बढ़ती क्रूरता का दर्शन कराया है।

पहले वीडियो में महाराष्ट्र के वाशिम जिले के एक गांव में एक युवक ने एक काले मुंह वाले बन्दर को जूते से पीटता हुआ दिख रहा है। उसने अपने साथियों के साथ इस बन्दर को पकड़ा और उसे पेड़ से लटका दिया और बार-बार उसके मुंह पर जूते मार रहा है। बन्दर चिल्लाता रहा और उसके मुंह से खून निकलता रहा। बाद में इसी बन्दर को नीचे गिराकर लकड़ी से मारता रहा। वह निर्दोष बन्दर चिल्लाता रहा, पैर की हड्डी टूट जाने से वह भाग भी नहीं सकता था। उसके पूरे शरीर से खून निकलता रहा परन्तु वे युवक हंसते हुये उसकी असहनीय पीड़ा का आनन्द ले रहे थे।

सोशल मीडिया पर यह वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने उन्हें पकड़कर जेल भेज दिया।

दूसरे वीडियो में एक युवक पिल्ला कुत्ते के छोटे से बच्चे को पकड़ा दिखाई दे रहा है। वह उसके पेट पर रस्सी बांधकर उसे लटका रहा है और जलती आग पर उसे डालता है। वह पिल्ला चिल्लाता है परन्तु वह युवक बार-बार उसे आग में डालता है और आखिर में वह पिल्ला मार डाला गया।

तीसरे वीडियो में चार लड़कियाँ नाच रहीं हैं। हाव-भाव से लगता है कि ये लड़कियाँ किसी कॉलेज की छात्रायें हैं और नाचते हुये कुछ पी रहीं हैं। वे लड़कियाँ नाचते हुये पिल्ले कुत्ते का बच्चा को पैर से दबाती हैं। बारी-बारी से बहुत निर्दयता के साथ उस पिल्ले पर चढ़ती हैं, वह पिल्ला बचने के लिये जैसे ही भागना चाहता है, तो दूसरी लड़की पैर से उसे फिर दबा देती है। लगभग 5 मिनिट के इस वीडियो में लड़कियों ने इस पिल्ले को अपने पैरों से दबाकर मार डाला।

ये सब देखकर एक बार तो रोना आ गया। आखिर हमारे सभ्य समाज को क्या हो गया है ये तीनों वीडियो पढ़े लिखे युवक-युवतियों के हैं। वर्तमान की पढ़ाई से जीवन के नैतिक मूल्य गायब हो गये हैं। अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, व्यापारी बनने के पहले एक मानव भी बनना चाहिये जिसमें दया, करुणा, मानवीयता, प्रेम, वात्सल्य भी हो। हम अपने बच्चों को शिक्षा के साथ इन गुणों का भी समावेश भी करें तो शायद हमें भविष्य में अपनी संतानों पर गर्व हो सकेगा।

DO'S & DON'Ts

1. .... Recite Namokar Mantra daily
2. .... Pluck flowers
3. .... Throw stones dogs
4. .... Help old aged people
5. .... Respect elders
6. .... Say lies
7. .... Wear silk and leather
8. .... Help poor people
9. .... Steal pencils from your classmate
10. .... Get angry
11. .... Tell the truth
12. .... Kill mosquitoes
13. .... Go to Pathshala
14. .... Listen to elders
15. .... Drink pepsi, cocacola etc.
16. .... Go to temple daily
17 . ... Eat honey

- Mitali Jain, Pune

जीवन में दुःखों का जिम्मेदार कौन

- न भगवान
- न रिश्तेदार
- न गृह नक्षत्र
- न परिवार
- न भाग्य
- न पड़ोसी
- न सरकार

जिम्मेदार आप स्वयं हैं

- आपका सरदर्द, फालतू विचारों का परिणाम
- पेट दर्द, गलत खाने का परिणाम
- आपका कर्ज, जरूरत से ज्यादा खर्च का परिणाम
- आपकी दुर्बलता/मोटापा/बीमारी, गलत जीवन शैली का परिणाम
- आपका कोर्ट केस, आपके अहंकार का परिणाम
- आपके विवाद, ज्यादा और व्यर्थ बोलने का परिणाम
- आपके परिवार से विवाद, आपके क्रोध का परिणाम
- आपकी गरीबी, दूसरों से ईर्ष्या का परिणाम
- आपकी व्यस्तता, देव-शास्त्र-गुरू की आराधना न करने का परिणाम
- आपका अनन्त काल के दुःख, आतमा की विराधना का परिणाम।।

- श्रीमति श्रेया देवांग गाला, मुम्बई

शोक समाचार : संस्था के हितैषी और हमारे पारिवारिक सदस्य डॉ. पवन जैन जबलपुर का दिनांक 24 दिसम्बर को स्वर्गवास हुआ। संस्था दिवंगत आत्मा के भव विराम की कामना के साथ अपनी भावांजलि प्रेषित करती है।

जबलपुर निवासी श्रीमति सुनीता जिनेन्द्र जैन की सुपुत्री सौ. अनुश्री का शुभ विवाह श्रीमति रश्मि वीरेश जैन सूरत के सुपुत्र श्री सम्यक् के साथ दिनांक 13 दिसम्बर को सानन्द संपन्न हुआ। नवयुगल को मंगलमय जीवन की शुभकामनायें।

Match The Pairs

1.	Adholok	Lower World, the home of hell beings
2.	Kalyanak	Auspicious moments in Tirthankaras's life
3.	Mithyatva	Wrong faith, perverted
4.	Samyaktva	Seeking worldly gains from performance of good deeds & Austerities
5.	Upabhoga	Spiritual victor
6.	Dev Puja	Worship of the Tirthankars
7.	Vatsalya	Shedding of already bounded karmic matter
8.	Pramada	Carelessness
9.	Chaitya	Action, deed
10.	Nirjara	Repeated enjoyment
11.	Tapa	Right faith
12.	Gandhara	Interpreter of Tirthankars
13.	Achetantva	Eatables
14.	Lokakash	Austeritym penance
15.	Karma	Affection
16.	Nidan	A hymn in praise of the Jinas
17.	Bhakshya	The inhabited universe
18.	Vidhan	Temple
19.	Jina	Particular procedural worshipping
20.	Jaymala	Unconsciousness

- Mitali Jain, Pune

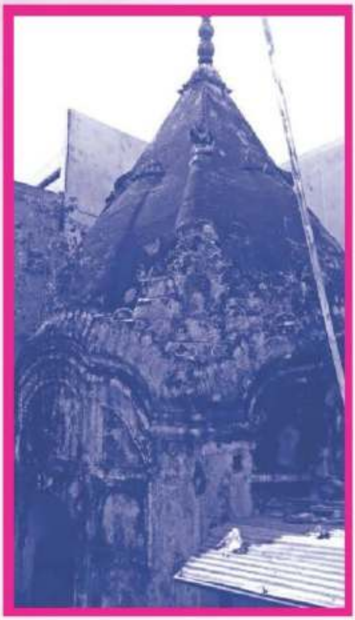

पाकिस्तान का जैन मंदिर जिसे संभालते हैं यहां के मौलाना

पाकिस्तान के प्रमुख शहर रावलपिण्डी में एक ऐसा जैन मंदिर है जिसकी देखरेख स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद भी एक मौलाना अशरफ अली का परिवार कर रहा है। अशरफ अली के अनुसार 1947 में भारत और पाकिस्तान के बंटवारे के समय जब हालात खराब हुये तब वहाँ रहने वाले एक जैन परिवार ने मंदिर की चाबी मौलाना अशरफ के पिता मौलाना गुलाम उल्ला खान को यह कहकर भारत चले गये कि जब हालात अच्छे हो जायेंगे तो वापस आकर मंदिर की चाबी ले लेंगे। मेरे पिता ने ये वादा किया था कि मंदिर को कुछ नहीं होगा, जब शांति हो जाये तो आप वापस आ जाना, परन्तु आज तक वे वापस नहीं आये। किसी दूसरे धर्म के प्रतीकों को नष्ट करना सही नहीं है। 6 दिसम्बर 1992 को जिस समय अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिराई गई उस समय कुछ लोग जैन मंदिर तोड़ने आये तो हमने उन्हें भगा दिया। उनके अनुसार आजादी

के पहले रावलपिण्डी के राजा बाजार में हिन्दुओं के साथ जैन समुदाय के लोग बहुत बड़ी संख्या में रहते थे। इन्हीं जैन लोगों ने यह मंदिर बनवाया था। अभी यह मंदिर एक मस्जिद के अन्दर है। पहले तो मात्र मंदिर था, बाद में उसके चारों मस्जिद का निर्माण किया गया।

मस्जिद में एक मदरसा मुस्लिम स्कूल भी है - जामिया तालीम उल कुरान। इसका संचालन अली का परिवार ही करता है। यहाँ के मुस्लिम बच्चों ने न तो किसी हिन्दू को देखा न ही वे हिन्दू संस्कृति से परिचित हैं। हम उन्हें विभिन्न धर्मों और संस्कृति की परिचय देते हुये जैन मंदिर और उसकी कला का परिचय कराते हैं। इसलिये हमने आज तक मंदिर को सुरक्षित रखा।

हैं न आश्चर्य किन्तु बिल्कुल सत्य।

साभार - दैनिक भास्कर समाचार पत्र

जैनी कौन ?

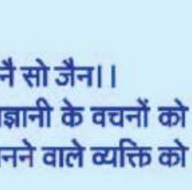

बादशाह जहाँगीर से कवि बनारसीदास से अच्छी दोस्ती थी। एक बार चर्चा करते हुये बादशाह ने पूछा - जैन किसे कहते हैं ?

बनारसीदासजी बोले - देव तीर्थंकर गुरु यती, आगम केवली बैन।
धर्म अनन्त नयात्मक, जो जानै सो जैन।।

(तीर्थंकर देव, निर्ग्रन्थ मुनिराज, केवलज्ञानी के वचनों को शास्त्र और अनन्त नय वाले धर्म को जानने वाले व्यक्ति को जैन कहते हैं।)

इतना छोटा परन्तु सटीक उत्तर सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुये।

संकल्प और विशुद्धि की मिसाल बना फुटेरा गांव

फुटेरा ग्राम में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान सानन्द संपन्न दमोह जिले में सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर के समीपस्थ ग्राम फुटेरा में दिनांक 20 दिसम्बर से 27 दिसम्बर तक आयोजित श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान अभूतपूर्व रूप से संपन्न हुआ। सकल दिगम्बर जैन समाज और तारण तरण जैन समाज के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के विशाल पाण्डाल का निर्माण किया गया। बाल ब्र.जतीशचन्दजी के निर्देशन में संपन्न इस विधान में ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित श्री अजित शास्त्री अलवर, श्री विराग शास्त्री, पण्डित श्री आकेशजी उभेगांव, डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ के मांगलिक व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधि विधान पण्डित श्री अशोकजी उज्जैन द्वारा श्री विराग शास्त्री, श्री वैभव जैन इंदौर, पण्डित नीरज शास्त्री के साथ श्री सम्मेदजी टीकमगढ़ के कुशल संयोजन में सम्पन्न किये गये। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में इन्द्र सभा, विराग शास्त्री द्वारा कथा पुराण की, श्री अमित बड़जात्या सूरत द्वारा संगीत संध्या, क्रमबद्धपर्याय गोष्ठी, अहिंसा जैन पब्लिक स्कूल फुटेरा के बच्चों द्वारा सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

फुटेरा की सम्पूर्ण समाज के अतिरिक्त जबेरा, अभाना, बक्स्वाहा, तेजगढ़, खड़ैरी, दमोह, जबलपुर, सागर आदि अनेक स्थानों से साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। फुटेरा की जैन समाज ने अल्प साधनों के बावजूद बड़े स्तर पर इस कार्यक्रम को आयोजित किया। इस कार्यक्रम की सफलता पर देश के अनेक नगरों से बधाई सन्देश प्राप्त हुये।

जबलपुर में जिनमंदिर का अठारहवाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का 18 वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 24 दिसम्बर से 30 दिसम्बर तक उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित हुआ। श्रीमति सोमा जैन, राजीवजी-श्रेणिकजी परिवार द्वारा आयोजित इस वार्षिकोत्सव में समयसार महामण्डल विधान का आयोजन किया। इस अवसर पर मंगलायतन से पधारे यशस्वी विद्वान पण्डित संजय शास्त्री के द्वारा विधान संचालन एवं व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान के अंतिम दिनों डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। वीतराग विज्ञान पाठशाला के बालकों एवं चेतना मण्डल की सदस्याओं द्वारा प्रासंगिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

'माँ सुनाओ मुझे वो कहानी' लोरी गीत की वीडियो सीडी विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों के संवाहन के लिये किये जा रहे प्रयासों के अन्तर्गत नवीन लोरी गीतों की वीडियो सीडी का विमोचन "माँ सुनाओ मुझे वो कहानी" किया गया। इसका लोकार्पण शाश्वतधाम उदयपुर के पंचकल्याणक के अवसर पर महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री अजितजी जैन बड़ौदरा एवं सौधर्म इन्द्र श्री ब्रजलालजी जैन, मुम्बई के द्वारा किया गया।

इस वीडियो सीडी में बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन और श्री विराग शास्त्री द्वारा रचित 8 लोरी गीतों का संकलन किया गया है। इस सीडी की शूटिंग मुम्बई, नागपुर और जबलपुर में की गई है। इसका निर्देशन श्री विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया है। इस सीडी के निर्माण में मुम्बई से श्री ब्रजलालजी दलीचन्दजी जैन, श्री भूपेन्द्र एच. शाह, श्री राजूभाई जैन दादर, श्री साकेत कमल बड़जात्या, श्री नरेश सिंघई नागपुर, श्रीमति नेहा संदेश जैन जबलपुर, डॉ. एस. सी. जैन जबलपुर का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

चहकती चेतना के केलेण्डर के लिये विज्ञापन आमंत्रित

सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र बाल पत्रिका चहकती चेतना की तीसरे वर्ष का केलेण्डर (अप्रैल 2018 से मार्च 2019) शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। यह रंगीन केलेण्डर अनेक प्रकार की नवीन जानकारियों को देने वाला होगा। यदि कोई साधर्मी, संस्था अथवा व्यापारिक संस्थान अपना विज्ञापन देना चाहें तो उनके विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। आप इसकी अधिक जानकारी के लिये पत्रिका के संपादक से 9300642434 पर संपर्क करें।

धार्मिक पजल गेम और एनीमेशन बाल गीत सीडी शीघ्र

संस्था द्वारा एक पजल गेम का निर्माण किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत जिनागम की तीन कहानियों के आधार पर निर्मित चित्रों को जोड़ना होगा। यह गेम 8 वर्ष से कम उम्र की बच्चों के लिये उपयोगी होगा।

इसके साथ 16 बाल कविताओं का एनीमेशन वीडियो सीडी का कार्य अंतिम चरण में है। इस वीडियो में प्रेरणादायी, खान पान सम्बन्धी और शिक्षाप्रद कवितायें शामिल की गईं हैं। संस्था के स्थायी सदस्यों को यह समस्त सामग्री मार्च माह में निःशुल्क भेजी जायेगी।

जबलपुर में सम्पन्न हुआ मूलगुण संस्कार समारोह

बच्चों में जीवन में जिनधर्म की आधारभूत प्रतिज्ञायें सदैव उनके जीवन का अंग बनें और वे संस्कारित समाज का हिस्सा बनें-इस भावना से श्री वीतराग विज्ञान मण्डल जबलपुर में मूलगुण संस्कार समारोह का मंगल आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत प्रातःकाल ब्र. महेन्द्रकुमारजी इंदौर के सान्निध्य में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम 8 वर्ष से 15 वर्ष तक 72 बालक-बालिकायें सफेद वस्त्रों एवं मुकुट हार पहनकर शामिल हुये। विधान के बाद पण्डित राजेन्द्रकुमारजी का मांगलिक प्रेरणादायी सम्बोधन हुआ। फिर सभी बच्चों ने अष्टमूलगुण का ग्रहण, पाँच पापों का स्थूलतया से त्याग किया। पाठशाला में नियमित आने की प्रेरणा दी गई साथ ही किसी भी परिस्थिति में आत्महत्या न करने की प्रतिज्ञा भी बच्चों ने ली। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी साधर्मियों ने इस तरह के नवीन कार्यक्रम की सराहना की। इस कार्यक्रम में ब्र. श्रेणिकजी, ब्र. मनोजजी, विराग शास्त्री के साथ अनेक युवा साथियों ने सहयोग प्रदान किया। यह कार्यक्रम श्री अभिषेकजी जैन के विशेष प्रयासों से सम्पन्न हुआ।

संस्था को सहयोग प्राप्त

5000/- श्री समकित हंसमुखलाल जैन, पुणे

2100/- सूरत निवासी चि. आगम सुपुत्र श्रीमति अनामिका पीयूषजी सुपौत्र श्री धनकुमारजी जैन-श्रीमति शांतिदेवी गोधा का शुभ विवाह गौहाटी निवासी सौ. तोरल सुपुत्र श्रीमति बबीता प्रदीपजी के संग सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में प्राप्त।

भक्ति कैसे ?

एक बच्चे ने एक विद्वान से प्रश्न किया कि जिनेन्द्र भगवान की पूजा और भक्ति बैठकर करना चाहिये या खड़े होकर ? तो विद्वान ने पूछा - आप अपने स्कूल में अपने टीचर से बात खड़े होकर करते हैं या बैठकर ? बच्चे ने कहा - वहाँ तो खड़े होकर ही बात करते हैं। फिर विद्वान ने पूछा - जब कोई मेहमान घर पर आता है तो उसका स्वागत कैसे करते हो ? बच्चे ने कहा - खड़े होकर। तो विद्वान ने कहा - फिर तीन लोक के नाथ जिनेन्द्र भगवान की भक्ति भी खड़े होकर ही करना चाहिये।

इसमें पूछने की क्या बात है ?

ज्ञानदीप

मंगल ज्ञान का दीप जलाओ,
मिथ्यातम को अभी नशाओ।
अरहंत प्रभु की बात सुनो,
सुख से चेतन सदा रहो।
विपदायें कितनी भी आयें,
सहज शांति से सदा रहो।।

सीख

रोज सबेरे उठना सीखो,
जय जिनेन्द्र फिर कहना सीखो।।
जिनदर्शन जो रोज करेगा,
उसका जीवन सुखी रहेगा।
सदाचारमय जीवन जीना,
जिनशासन का अमृत पीना।
अच्छे-अच्छे काम करोगे,
जल्दी से भगवान बनोगे।।

भोर

बेटा उठ जा राजदुलारे, देखो कितनी हो गई भोर।
जल्दी से स्नान तू कर ले, चल चल जिनमंदिर की ओर।
जिनवर प्रक्षाल करेंगे, पंच प्रभु का भजन करेंगे।
अब प्रमाद को जल्दी छोड़, दौड़ लगा मंदिर की ओर।।

रचनाकार - विराग शास्त्री

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें

भव के अभाव की भावना में जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

जन्म मरण का नाश हो, यही भाव **अव्यान** ।
भेद ज्ञान पुरुषार्थ हो, पद पाओ निर्वाण ।।

अव्यान अंकित जैन, इंदौर 4 दिसम्बर 2017

जिनधरम की प्यारी बिटिया, देव-शास्त्र-गुरु को ध्याना।
हो भविशा तेरी शुभ पावन, आत्मन कार्य सदा करना।।

ध्याना आत्मदीप भायाणी, चेन्नई 2 जनवरी 2018

उत्तम कुल जैन धरम शुभ, पाया काम करो उत्तम।
उर विराग स्वस्तिमय जीवन, अनय लहो आतम दर्शन।।

अनय विराग जैन, जबलपुर 19 जनवरी 2018

शौर्य की अनोखी प्रतिभा

दमोह जिले के जबेरा नगर की वीतराग विज्ञान पाठशाला का छात्र शौर्य जैन विशिष्ट प्रतिभा का धनी है। मात्र साढ़े तीन वर्ष के शौर्य को आत्मा की 47 शक्तियों, 47 नय, 1 से 25 तक की संख्या के धार्मिक भेदों के नाम, अनेक धार्मिक कवितायें और भजन याद हैं। इसके साथ ही शौर्य ने रात्रिभोजन का त्याग, आलू-प्याज आदि जमीकन्द का त्याग, प्रतिदिन जिनेन्द्र दर्शन जैसे नियमों का भी पालन करता है। शौर्य पण्डित कमलकुमारजी जैन का पोता और श्री धीरज शास्त्री का पुत्र है।

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द -कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरूदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णत: नि:शुल्क

- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास
- छठवीं कक्षा में प्रवेश

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 20 मार्च 2018

प्रवेश पात्रता शिविर 20 अप्रेल से 23 अप्रेल 2018

संपर्क : श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़ जि. भावनगर सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846 244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 विराग शास्त्री : 9300642434

आप प्रवेश फार्म हमारी बेवसाइट www.vitragvani.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। email:-kahanshishuvihar@gmail.com

खुशखबरी

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रेल 2018)

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट,
गिरधरपुरा, कोटा के परिसर में
प्रेमचन्द जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन

आप सभी को सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द–कहान दि. जैन मुमुक्षु आश्रम टस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा हेतु आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन का मंगल शुभारम्भ सोमवार, 2 अप्रेल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8 वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्या निकेतन की मुख्य विशेषतायें

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी.के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक अध्ययन निर्माण का सुनहरा अवसर।
- 7 वीं कक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50 प्रतिशत की छात्रवृत्ति।
- 80 प्रतिशत अंक से 10 वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10 वीं – तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।
- सर्वसुविधा युक्त लैट – बाथ अटैच नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्च स्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट: प्रवेश प्रक्रिया मार्च में सम्पन्न की जायेगी।

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु सम्पर्क सूत्र :

9785643203, 7891563353, 773797979912, 8104597337

पता – बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी,
छावनी, कोटा 324007 राज.